कार्स्ट स्थलाकृति

by dharmesh nanda

चूने के पत्थर वाली चट्टानों के क्षेत्र में भूमिगत जल के द्वारा सतह के ऊपर तथा नीचे विचित्र प्रकार के स्थलरूपों का निर्माण घोलन द्वारा होता है। लाइमस्टोन वाले कार्स्ट प्रदेश की ऊपरी सतह पर जल ने घोल द्वारा तथा नीचले भाग में भूमिगत जल ने अपने अपरदनात्मक तथा निक्षेपात्मक कार्य द्वारा विचित्र प्रकार की स्थलाकृति का विकास कर रखा है।

अपरदनात्मक स्थलरूप

लैपिज - घुलनक्रिया के फलस्वरूप ऊपरी सतह अत्यधिक ऊबड़-खाबड़ तथा असमान हो जाती है। इस तरह की स्थलाकृति को लैपीज कहते हैं। लाइमस्टोन की खुली सतह पर जल चट्टान की संधियों को अपनी घुलन क्रिया द्वारा विस्तृत करने लगता है, जिस कारण छोटी - छोटी शिखरिकाओं (rides and pinnacles) का निर्माण हो जाता है।

लैपीज (lapies)

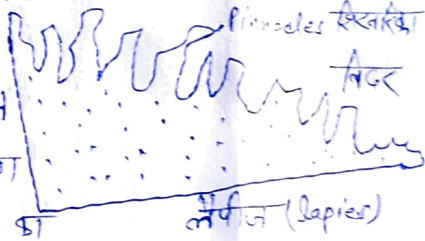

घोलरन्ध्र तथा उससे सम्बन्धित रूप

डोलाइन - जब इनके छिद्रों का अत्यधिक विस्तार हो जाता है तो उन्हें डोलाइन कहते हैं। डोलाइन से कुछ भिन्न छिद्र भी होता है, जिसे घोलपटल कहा जाता है। सतह के ध्वस्त हो जाने से निर्मित विलियन रंध्र को ध्वस्त रंध्र कहते हैं।

कार्स्ट खिड़की - जब डोलाइन या विलयन रंध्र की ऊपरी सतह के ध्वस्त हो जाने से वृहद छिद्र का निर्माण होता है तथा जब उसका ऊपरी भाग खुला होता है तो उसे कार्स्ट खिड़की कहते हैं।

युवाला तथा पोल्जे

युवाला - युवाला का निर्माण कई रूपों में होता है। निरन्तर घोलीकरण के फलस्वरूप कई डोलाइन मिलकर एक वृहदाकार गर्त का निर्माण करते हैं। इस विस्तृत गर्त को युवाला कहा जाता है। इसका निर्माण ऊपरी छत के ध्वस्त हो जाने पर भी होता है। असंख्य घोल रन्ध्र भी विस्तार के कारण परस्पर युवाला का निर्माण

करते हैं। इन्हें संयुक्त या मिश्रित घोलरन्ध्र भी कहा जाता है।

पोलिये – युवाला से भी अधिक विस्तृत गर्त को पोलिये कहते हैं

कार्स्ट प्रदेश की घाटियां — क्षैतिज स्तर वाले या [illegible] हुए स्तर वाले चूने के क्षेत्र में ऊपरी सतह पर निर्मित [illegible] के रन्ध्र या छिद्र वाले स्थलरूप को कार्स्ट मैदान कहा जाता है

धंसती सरिता (Sinking creek) – कार्स्ट मैदान की ऊपरी सतह पर इतने अधिक घोल छिद्र होते हैं कि सम्पूर्ण सतह एक छलनी के समान दीखती है, जिसके घोल छिद्र कीप का कार्य करते हैं जब छिद्रों या विवरों से होकर नदी का जल नीचे चला जाता है तो उसे धंसती सिरिता (सरिता) कहते हैं तथा जिस बिन्दु पर जल नीचे [illegible] होता है उसे सिन्क कहते हैं

अंधी घाटी → जब नदी एक विलन छिद्र पर समाप्त हो जाती है तथा यह [illegible] अपनी घाटी जब एक लम्बे समय तक रहती है तो छिद्र के ऊपर [illegible] अपनी घाटी को कार्स्ट मैदान से अधिक नीचा कर लेता है

कार्स्ट घाटी या घोल घाटी → अधिक वर्षा के समय पृष्ठीय नदियां कुछ दूरी तक प्रवाहित होती हैं तथा अपनी चौड़ी तथा U आकार की घाटी का निर्माण कर लेती हैं। इन घाटियों को घोल घाटी या कार्स्ट घाटी कहते हैं

कन्दरा या गुफा (Caves or Caverns)

कन्दरायें कार्स्ट प्रदेशों की भूमिगत जल के अपरदन द्वारा निर्मित सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थलाकृति होती हैं। कन्दरायें ऊपरी सतह के नीचे एक रिक्त स्थान के रूप में होती हैं जिनकी रचना भूमिगत जल की घुलन क्रिया तथा अपघर्षण द्वारा होती है इनका रूप तथा आकार भिन्न-भिन्न होता है। छोटे आकार से लेकर [illegible] आकार कन्दरायें देखने को मिलती हैं कुछ कन्दरायें कई [illegible] के क्षेत्रफल में फैली होती हैं अनेक शुष्क कन्दराओं के उदाहरण मिलते हैं कन्दराओं का निर्माण लाइमस्टोन के अलावा अन्य चट्टानों में भी होता है इस तरह चूने के पत्थर की घुलनशीलता ही कार्स्ट प्रदेशों में कन्दराओं के निर्माण का मुख्य कारण है।